



Cambridge IGCSE™

HINDI AS A SECOND LANGUAGE

0549/02

Paper 2 Listening

October/November 2021

TRANSCRIPT

Approximately 45 minutes

This document has **8** pages.

Cambridge Assessment International Education
Cambridge IGCSE
November 2021 Examination in Hindi as a Second Language
Paper 2 Listening Comprehension

Turn over now

[Pause 5 seconds]

FEMALE: अभ्यास 1: प्रश्न 1-6

प्रश्न 1 से 6 के लिए आप क्रमानुसार कुछ संक्षिप्त संवाद सुनेंगे। उनके आधार पर प्रत्येक प्रश्न का उत्तर नीचे दी गई रेखा पर लिखिए। आपके उत्तर जहाँ तक हो सके संक्षिप्त होने चाहिए।

आपको प्रत्येक संवाद दो बार सुनाया जाएगा।

[Pause 5 seconds]

[Signal]

[Pause 3 seconds]

MALE: संवाद 1

FEMALE: * कृपया ध्यान दीजिए। स्टेशन परिसर में भीड़ की वजह से कुछ समय के लिए राजीव चौक मेट्रो स्टेशन में प्रवेश बंद कर दिया गया है। सिग्नल खराब हो जानों की वजह से मेट्रो सेवाएँ देरी से चल रही हैं। यात्रियों को सलाह दी जाती है कि यातायात के वैकल्पिक साधनों का प्रयोग करें। रीगल सिनेमा और खड़क सिंह मार्ग से विशेष बस सेवाएँ भी शुरू कर दी गई हैं। आपकी असुविधा के लिए हमें खेद है। **

[Pause 10 seconds]

MALE: संवाद 2

FEMALE: * महिला: भैया, एक कोट सिलवाना था!

पुरुष: ज़रूर बहन जी। मास्टर जी को अपना नाप दे दीजिए।

महिला: कितनी देर लगेगी? क्या मास्टर जी बहुत व्यस्त हैं?

पुरुष: नहीं, बस दो मिनट। वैसे आपको कोट कब तक चाहिए?

महिला: अगले हफ़्ते तक!

पुरुष: आप मज़ाक तो नहीं कर रहीं? कम से कम एक महीना लगेगा।

महिला: एक महीना? दर्ज़ी छुट्टी पर गए हैं क्या?

पुरुष: नहीं, बहन जी, शादी का मौसम चल रहा है। **

[Pause 10 seconds]

FEMALE: संवाद 3

MALE: * कृपया ध्यान दें। कुटीर उद्योग इंपोरियम के द्वार शाम आठ बजे बंद हो जाएँगे। लेकिन चिंता न करें। हमारे बिक्री सहायक आपकी खरीदारी और पैकिंग का काम पूरा कराने में आपकी पूरी मदद करेंगे। खरीदी जा रही वस्तु में यदि आप कोई फेरबदल कराना चाहते हैं तो आपको सामान लेने अगले दिन आना होगा। रेस्तराँ शाम नौ बजे तक खुला रहेगा। इसलिए आराम से खाने-पीने का आनंद लें। केंद्रीय कुटीर उद्योग इंपोरियम में पधारने के लिए आपका धन्यवाद। **

[Pause 10 seconds]

FEMALE: संवाद 4

MALE: * पुरुष: बहन जी, कोई ऐसा मटका दिखाइए जिसमें पानी ठंडा रहे।

महिला: अरे! बाबूजी, हमारे हर मटके में पानी ठंडा रहता है। निश्चित रहिए।

पुरुष: नहीं, हम पिछली गर्मियों में बहुत परेशान हुए।

महिला: क्यों?

पुरुष: अरे, मटका लाते, पानी ठंडा नहीं होता और फेंक देते!

महिला: तब तो आप यह मिट्टी कूल वाला मटका ले लीजिए। झंझट ही खत्म।

पुरुष: ये! रंग-बिरंगा, टूटी वाला? प्लास्टिक का सा लगता है!

महिला: बाबूजी, यह पाँच मिट्टियों और नई तकनीक से बना है। **

[Pause 10 seconds]

MALE: संवाद 5

FEMALE: * पाकिस्तान ने चीन को उन्नत जाति के गधे बेचने का प्रस्ताव रखा है। गधों की संख्या के हिसाब से पाकिस्तान दुनिया में तीसरे स्थान पर है और चीन पहले स्थान पर। परंतु चीन में गधों की माँग तेज़ी से बढ़ रही है क्योंकि वहाँ उनका उपयोग यातायात और खेती के साथ-साथ दवाएँ बनाने में भी होता है। जबकि पाकिस्तान विदेशी मुद्रा कमाने के लिए निर्यात के नए-नए रास्ते खोज रहा है। पाकिस्तान के एक प्रांतीय अधिकारी का कहना है कि चीनी कंपनियाँ पाकिस्तान में गधों की फ़ार्मिंग के लिए करोड़ों रुपए का निवेश करना चाहती हैं। **

[Pause 10 seconds]

MALE: संवाद 6

FEMALE: *महिला: नमस्ते। डॉक्टर साहब हैं क्या?

पुरुष: जी, हैं तो लेकिन किसी को देख रहे हैं। आपको कब का समय दिया था?

महिला: समय तो नहीं ले सकी। अचानक ज़रूरत आ पड़ी है।

पुरुष: पर, आपको प्रतीक्षा करनी होगी।

महिला: लेकिन, मैं तो अपनी माँ के लिए मिलना चाहती थी।

पुरुष: ठीक है, उन्हें अंदर ले आइए!

महिला: जी नहीं, वे तो घर पर हैं। मैं बस कुछ पूछना चाहती थी!

पुरुष: माफ़ कीजिए। मैं कुछ समझा नहीं।

महिला: ऐसा है, मुझसे उनकी दवा की पर्ची गुम हो गई है। **

[Pause 10 seconds]

MALE: यह अभ्यास 1 का अंतिम संवाद था। थोड़ी देर में आप अभ्यास 2 सुनेंगे। अब आप अभ्यास 2 के प्रश्नों पर ध्यान दीजिए।

[Pause 30 seconds]

FEMALE: अभ्यास 2: प्रश्न 7

MALE: लंदन के शाही क़िले टावर ऑफ़ लंदन के संग्रहपाल पॉल मर्चेंट के साथ एशियन आई की संवाददाता स्मृति मेहता की बातचीत को ध्यान से सुनिए और नीचे छोड़े गए खाली स्थानों (a-h) को भरिए।

यह बातचीत आपको दो बार सुनाई जाएगी।

[Pause 5 seconds]

[Signal]

[Pause 3 seconds]

FEMALE: * स्मृति: पॉल मर्चेंट साहब, एशियन आई के पाठकों की ओर से आपका स्वागत है।

MALE: पॉल: शुक्रिया, स्मृति जी।

स्मृति: पॉल साहब, कोहिनूर हीरा शायद हमेशा से ही टावर ऑफ़ लंदन की यात्रा पर आने वाले सैलानियों के आकर्षण का केंद्र रहा है। इसकी खास वजह क्या है?

पॉल: स्मृति जी, इसकी वजह इस हीरे का लंबा और दिलचस्प इतिहास है जिसमें कई कहानियाँ जुड़ी हुई हैं। मिसाल के तौर पर कुछ लोग मानते हैं कि यह हीरा लगभग पाँच हजार साल पहले महाभारत के काल में मिला था और इस का प्राचीन नाम स्यामंतक मणि था। लोग यह भी मानते हैं कि इसमें कोई जादुई शक्ति है। क्योंकि यह हीरा जिसके पास जाता है उसी का राज-पाट चलता है।

स्मृति: ठीक है। ये सब तो कहानियों की बातें हैं। पर इतिहास क्या कहता है?

पॉल: जहाँ तक इतिहास का प्रश्न है, कोहिनूर किस खान से निकला था इसकी कोई प्रामाणिक जानकारी नहीं मिलती। माना यह जाता है कि यह कृष्णा नदी के पास कोल्लूर की खदानों से मिला था जो इन दिनों आंध्र प्रदेश में हैं। कोहिनूर का पहला जिक्र मुग़ल बादशाह बाबर की आत्मकथा बाबरनामा में मिलता है। बाबर ने लिखा है कि दक्षिण भारत के काकतीय राजाओं के पास एक बहुत बड़ा हीरा होता था। काकतीय राजा प्रतापरुद्र ने दिल्ली की सल्तनत से संधि करने के लिए उसे अलाउद्दीन खिल्जी को दिया और पानीपत की लड़ाई में जीत के बाद हुमायूँ ने यह हीरा अपने पिता बाबर को भेंट कर दिया। लेकिन उस समय इस हीरे का नाम कोहिनूर नहीं था।

स्मृति: तो फिर इस बहुमूल्य हीरे का नाम कोहिनूर किसने और कब रखा?

पॉल: फ़ारस के बादशाह नादिर शाह ने। अठारवीं सदी में मुग़ल शासन के कमजोर पड़ जाने के बाद नादिर शाह ने दिल्ली पर कब्ज़ा कर लिया था और अपने सैनिकों को शहर में मनमानी की इजाज़त दे दी। उन्हें रोकने के लिए मुग़ल बादशाह मुहम्मद शाह ने नादिर शाह को ढेर सारे जवाहरात दिए थे जिनमें यह हीरा भी शामिल था। नादिर शाह इस हीरे से इतना प्रभावित हुआ कि उसने इसका नाम कोह-ए-नूर रख दिया जिसका मतलब है रोशनी का पहाड़।

स्मृति: तो क्या अंग्रेजों को कोहिनूर हीरा फ़ारस से मिला था?

पॉल: नहीं। कुछ वर्षों बाद पंजाब के सिख महाराजा रणजीत सिंह ने फ़ारस के शहजादे को एक लड़ाई में बंदी बना लिया था और उसे छोड़ने के लिए कोहिनूर की माँग रखी थी। फ़ारस के शाह को वह शर्त माननी पड़ी और कोहिनूर लौटा दिया। लेकिन कुछ ही वर्षों बाद अंग्रेजों ने सिखों को हरा कर यह हीरा अपने कब्ज़े में ले लिया और अंग्रेज़ वायसराय डलहौज़ी ने इसे ब्रितानी महारानी विक्टोरिया को भेंट कर दिया।

स्मृति: पॉल साहब कोहिनूर कितना बड़ा है और क्या इसकी कीमत का कोई अंदाज़ा है?

पॉल: नहीं। कोहिनूर इतना दुर्लभ हीरा है कि इसे अनमोल कहा जाता है। लेकिन जौहरियों का कहना है कि नीलाम होने पर इसकी बोली एक अरब डॉलर से भी ऊपर जा सकती है। यह तो तब है जबकि घटते-घटते आजकल यह हीरा 793 कैरट से केवल 105 कैरट का ही रह गया है क्योंकि इसकी चमक बढ़ाने के लिए इसे एकाधिक बार तोड़ा-तराशा गया।

स्मृति: पॉल मर्चेट साहब, कोहिनूर के बारे में इतनी रोचक जानकारी देने के लिए बहुत-बहुत धन्यवाद।

पॉल: आपका भी धन्यवाद। **

[Pause 30 seconds]

FEMALE: अभ्यास 2 की यह बातचीत अब आप फिर से सुनेंगे।

[Pause 3 seconds]

[Repeat from * to **]

[Pause 30 seconds]

FEMALE: अभ्यास 2 अब समाप्त हुआ। थोड़ी देर में आप अभ्यास 3 सुनेंगे। अब आप अभ्यास 3 के प्रश्नों पर ध्यान दीजिए।

[Pause 30 seconds]

MALE: अभ्यास 3: प्रश्न 8–15

FEMALE: शिक्षाशास्त्री प्रोफ़ेसर गार्गी कलबाग के साथ युवमंच के प्रस्तुतकर्ता अरुण दिवाकर की बातचीत को ध्यान से सुनिए और नीचे दिए गए प्रत्येक कथन में रेखांकित की गई ग़लती को सही शब्दों या वाक्यांश का प्रयोग करते हुए ठीक कीजिए।

यह बातचीत आपको दो बार सुनाई जाएगी।

[Pause 5 seconds]

[Signal]

[Pause 3 seconds]

MALE: * अरुण: प्रोफ़ेसर गार्गी कलबाग, आज के युवमंच में आपका स्वागत है।

गार्गी: धन्यवाद, अरुण जी।

अरुण: गार्गी जी, बिल गेट्स ने एक बातचीत में कहा था कि आने वाले समय में रोज़गार उन्हीं को मिलेंगे जो अर्थशास्त्र, इंजीनियरी और विज्ञान के विषय पढ़ेंगे। लेकिन औसत छात्रों को ये विषय कठिन लगते हैं। क्या कोई तरीका है इन्हें सुगम और लोकप्रिय बनाने का?

गार्गी: देखिए, अरुण जी विषय कठिन नहीं होते। पढ़ने और पढ़ाने के तरीके उन्हीं कठिन बनाते हैं। स्कूलों में जिस तरह की किताबी रट्टा प्रणाली से विषय पढ़ाए जाते हैं, वह उन्हीं

कठिन ही नहीं बल्कि जीवन के लिए निरर्थक भी बनाती है। स्कूलों और कॉलेजों से पढ़कर निकलने वाले औसत छात्रों का प्रायोगिक ज्ञान ना के बराबर ही होता है। इसलिए उनको रोजगार पाने में कठिनाई होती है।

अरुणः आप ठीक कह रही हैं। लेकिन इसका विकल्प क्या है?

गार्गीः विकल्प है शिक्षा प्रणाली में सुधार। लेकिन इस सुधार की पहल लोगों को करनी होगी और कुछ लोग कर भी रहे हैं। मिसाल के तौर पर शिकागो से पढ़े एक इंजीनियर ने पैंतीस साल पहले पुणे के पास एक गाँव में विज्ञान आश्रम नाम का एक विद्यालय खोला था जिसका उद्देश्य था विज्ञान और इंजीनियरी की प्रायोगिक शिक्षा देना। इस विज्ञान आश्रम को तो खास सफलता नहीं मिली लेकिन पाँच साल पहले दो युवा इंजीनियरों ने मैसूरु में एक विज्ञान आश्रम प्रयोगशाला खोली थी जो बहुत लोकप्रिय हो रही है।

अरुणः ज़ाहिर सी बात है, इन दोनों को पुणे के विज्ञान आश्रम से प्रेरणा मिली होगी?

गार्गीः शायद नहीं। इन दोनों का कहना है कि इन्हें बचपन से ही कर नई-नई चीज़ें बनाने का शौक था। पढ़ाई के बाद इन्होंने बड़ी सूचना-प्रौद्योगिकी कंपनियों में काम किया। लेकिन नौकरी में रुतबा तो था पर वह रोमांच नहीं था जो नई-नई चीज़ें बनाने से मिलता था। इसलिए इन्होंने नौकरी छोड़ी और बच्चों के लिए यह विज्ञान आश्रम प्रयोगशाला खोली।

अरुणः लेकिन बच्चों के लिए विज्ञान आश्रम प्रयोगशाला ही क्यों? कोई कारखाना या कार्यशाला क्यों नहीं खोल ली इन्होंने?

गार्गीः इन दोनों का कहना है कि हमें अपने बच्चों को सीखने की कला सिखाने की ज़रूरत है ताकि वे तेज़ी से बदलती दुनिया में अच्छे रोजगार पा सकें। आजकल कंपनियों को कृत्रिम बुद्धि के इंजीनियरों, ऐप बनाने वालों, ड्रोन विशेषज्ञों और आभासी खेल बनाने वालों की ज़रूरत है। दस साल पहले इस तरह के काम किस ने सुने थे? लेकिन बच्चों में ऐसे कामों की प्रतिभा जगाने के लिए उन्हें प्रयोगशालाएँ चाहिए और उनमें लगी मशीनों पर हाथ आजमाने की छूट चाहिए। यही सोच कर इन दोनों ने विज्ञान प्रयोगशाला खोली जिसमें बच्चे निश्चिंत होकर नई-नई चीज़ें बनाने और समस्याओं का हल खोजने का प्रयास कर सकते हैं।

अरुणः किस तरह की समस्याओं का?

गार्गीः प्रयोगशाला में हाथ के औज़ारों से लेकर, स्वचालित मशीनें और त्रिआयामी प्रिंटर सभी कुछ मौजूद हैं जिन का प्रयोग बच्चे समस्याओं का हल खोजने में करते हैं। इस प्रक्रिया को टिकरिंग कहा जाता है जिसका मतलब है चीज़ों को सहज तरीके से सुधारने की कोशिश करना।

अरुणः लगभग कितने बच्चे आते हैं इस टिकरिंग प्रयोगशाला में?

गार्गीः इसमें पाँच हजार से ज़्यादा बच्चे हाथ आजमा चुके हैं। ध्रुव का कहना है कि कंप्यूटरों की तरह टिकरिंग प्रयोगशालाएँ भी हर स्कूल का हिस्सा बननी चाहिए। तभी हम युवाओं में छुपी प्रतिभाओं के द्वार खोल सकते हैं। फिलहाल ध्रुव की योजना हर शहर में एक टिकरिंग प्रयोगशाला खोलने की है।

अरुणः प्रोफ़ेसर गार्गी कलबाग, युवमंच में आने और टिकरिंग प्रयोगशालाओं की रोचक जानकारी देने के लिए बहुत-बहुत धन्यवाद।

गार्गीः मुझे मंच देने के लिए आपका भी धन्यवाद। **

[Pause 30 seconds]

MALE: अभ्यास 3 की यह बातचीत अब आप फिर से सुनेंगे।

[Pause 3 seconds]

[Repeat from * to **]
[Pause 30 seconds]

MALE: अभ्यास 3 अब समाप्त हुआ। थोड़ी देर में आप अभ्यास 4 सुनेंगे। अब आप अभ्यास 4 के प्रश्नों पर ध्यान दीजिए।

[Pause 30 seconds]

FEMALE: अभ्यास 4: प्रश्न 16–23

MALE: दिल्ली से उत्तरप्रदेश जाने वाले राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या 24 पर लेखिका और पत्रकार मालती प्रकाश के विचारों को ध्यान से सुनिए और निम्नलिखित वाक्यों को पूरा करने के लिए A, B अथवा C में से किसी एक विकल्प को सही [✓] का निशान लगा कर चुनिए।

उनके विचार आपको दो बार सुनाए जाएँगे।

[Pause 5 seconds]
[Signal]
[Pause 3 seconds]

FEMALE: * सड़क की भी अपनी एक प्रकृति होती है। उस से गुजरने वाले यात्रियों के साथ उसका अपना ही नाता होता है। सुबह, दोपहर, शाम उसकी सुरत बदलती जाती है। जिस सड़क की मैं बात करना चाहती हूँ, वह दिल्ली से उत्तर प्रदेश को जोड़ने वाला राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या 24 है, जिसे संक्षेप में एनएच-24 के नाम से जाना जाता है। गाज़ियाबाद शहर के सीने पर भागती हुई यह सड़क बहुत बेरहम है।

हर सड़क की अपनी गति और अपना ठहराव भी होता है। एनएच-24 पर भी गाड़ियाँ कहीं तो तीव्र वेग वाली लहरों सी बहती हैं तो कहीं ऐसे थम जाती हैं जैसे अब इससे पार निकलना मुश्किल होगा। अच्छा यह है कि आप अपने प्रिय गानों की एक लंबी सूची बना लें और यातायात जाम में फँस जाने पर मुक्त कंठ से गाएँ। गाड़ियों के शोर में आपकी आवाज़ किसी को नहीं सुनाई देगी।

एनएच-24 को कोई सजीव नाम देना हो तो किसी कुख्यात नाम की तलाश करनी होगी। इसके लिए सुझाव मँगाए जा सकते हैं। क्योंकि यहाँ यातायात के सारे नियम धराशायी हो जाते हैं। गलती से यदि किसी ने यातायात के नियमों का पालन करते हुए लाल बत्ती पर गाड़ी रोकी तो हो सकता है उसकी ज़िंदगी की गाड़ी वहीं थम जाए, क्योंकि पीछे से आ रही गाड़ी शायद ही उसे बख़्शेगी।

ट्रक इस सड़क पर कुछ इस अदा से चलते हैं मानो इसे खालिस उन्हीं के लिए बनाया गया हो। अस्सी किलोमीटर की गति कब आठ की गति में तब्दील करनी पड़ जाए, इसके लिए पाँव ब्रेक पर जमे होने चाहिए। वैसे भी सड़क के बीचों-बीच बनी विभाजक पट्टी पर लगी हरी झाड़ियों में से कभी भी कोई भी उछल कर सामने आ सकता है। पैदल यात्री नहीं तो कोई मोटरसाइकिल वाला ही अवतरित हो जाएगा।

एनएच-24 पर यातायात का कोई एक नियम नहीं। इस सड़क के नियम इस आधार पर तय होते हैं कि आप पैदल चल रहे हैं, मोटरसाइकिल पर हैं, कार में, ऑटो में या फिर बस में बैठे हैं। कई बार सुबह के समय यहाँ आने और जाने वाली दोनों सड़कों पर एक ही दिशा के मुसाफिर उड़ रहे होते हैं। पैदलपथों पर मोटरसाइकिलें दनदना रही होती हैं तो बचे हर इंच पर कारें। इतनी अराजकता कि लगता है जैसे किसी राजनीतिक दल का जलसा होने वाला हो।

यातायात पुलिस होती है, मगर लाचार-सी। हर सफ़र यहाँ आपके अनुभव में कुछ जोड़ता है। मसलन, किसी एक सड़क पर रोज़ चलते-चलते आप उसके गड्डों से परिचित हो जाते हैं। कौन-सा मोड़ तेज़ होगा, कहाँ ठहराव मिलेगा! सड़क से उतरती हुई बस्तियों की तरफ गाड़ियाँ आहिस्ता हो जाएँगी क्योंकि यहाँ लोग अपने घरों का रुख करते हैं।

अगर इन सारी बातों को उलटा कर दें और कभी सड़क के दिल की बात भी सुनें, किसी नाटक की तर्ज़ पर, तो हो सकता है सड़क अपने ही किसी मोड़ पर गाड़ियों के टूटे हुए शीशे के पास सुबकती

हुई मिल जाए! तेज भोंपू बजा रही गाड़ियों से चीख कर कहती हुई कि इतना शोर क्यों मचाते हो बाबूजी, मैं तो बहरी हुई जाती हूँ... मैं तो सबको उसके तय समय पर मंज़िल तक पहुँचाना चाहती हूँ! लेकिन सब आगे निकलने की होड़ में सारे नियम तोड़ देते हैं। सड़क शायद कहे कि पहले बच्चे स्कूल पहुँच जाएँ, मरीज़ अस्पताल, फिर तुम्हें भी दफ़्तर पहुँचा दूँगी।

एनएच-24 से मेरा हर रोज़ साक्षात्कार होता है। शह और मात के खेल की तरह। करीब दो घंटे का समय हर रोज़ इस सड़क पर गुजरता है। सुबह गाड़ी के शीशे के सामने से चमकता हुआ सूरज मेरी आँखों को चौंधियाता है। शाम को मेरे साथ ही जैसे अपना सफ़र पूरा करता हुआ ढल जाता है। मैं हर रोज़ सोचती हूँ कि कभी सूरज को मात देकर घर पहले पहुँच जाऊँ। तो ज़रूरी सोचिए और बताइए कि इस सड़क का नाम किस 'महापुरुष' के नाम पर रखा जाए! **

[Pause 30 seconds]

MALE: अभ्यास 4 के इन विचारों को अब आप फिर से सुनेंगे।

[Pause 3 seconds]

[Repeat from * to **]

[Pause 1 minute]

MALE: अभ्यास 4 और यह परीक्षा समाप्त हुई।
This is the end of the examination.

Permission to reproduce items where third-party owned material protected by copyright is included has been sought and cleared where possible. Every reasonable effort has been made by the publisher (UCLES) to trace copyright holders, but if any items requiring clearance have unwittingly been included, the publisher will be pleased to make amends at the earliest possible opportunity.

To avoid the issue of disclosure of answer-related information to candidates, all copyright acknowledgements are reproduced online in the Cambridge Assessment International Education Copyright Acknowledgements Booklet. This is produced for each series of examinations and is freely available to download at www.cambridgeinternational.org after the live examination series.

Cambridge Assessment International Education is part of the Cambridge Assessment Group. Cambridge Assessment is the brand name of the University of Cambridge Local Examinations Syndicate (UCLES), which itself is a department of the University of Cambridge.